दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

प्यारे पाठकों! जब वह पापी ख़ूनी हत्यारे कर्बल नगरी मे आज ही की तारीख़ हुसैन और उनके साथियों को मार चुके तो यह अनोखा अपराध किया कि उनके घर की स्त्रियों को लूट लिया। उनके नन्हें नन्हें बच्चों को थप्पड़ मारे, उनके घर का सब सामान लूटकर उनके ख़ेमों में आग लगा दी। उस समय सारे संसार में काली आँधी चल रही थी आसमान से खून की वर्षा हो रही थी, हुसैन का खेमा नहीं जल रहा था बल्कि कुल संसार में आग लगी हुयी थीः-

भयानक करबल का बन है,
कि एक हलचल सी बरपा है
उधर आकाश पर चारों
तरफ़ छाया अंधेरा है

लगी है आग दुनिया में,
धुवां जंगल से उठता है
है मन संसार का व्याकुल
फ़ज़ा से ख़ूँ बरसता है
है ऐसा कष्ट नद्दी का
कि पानी सर पटकता है

●●●

"जिस तरह तुम्हें अपने ऊपर ज़ुल्म पसन्द नहीं, दूसरों पर तुमभी ज़ुल्म मत करो"।

"जैसा अपने लिये पसन्द करो, वैसा ही दूसरों के लिए भी।"

-हज़रत इमाम हुसैन[अ०]

सलाम

'नदल हिन्दी'

दिल को ग़मे हुसैन का ख़ूगर बना दिया
कमज़ोर दिल को अपने क़वीतर बना दिया

बंदी को लुत्फ़े शह ने सुख़नवर बना दिया
क़तरे को बहर, नुक़्ते को दफ़्तर बना दिया

ये मातमे हुसैन का एहसान देखिये
वीरान घर था, ख़ुल्द से बेहतर बना दिया

सरवर ने हुर के अश्क़े निदामत को पोंछ कर
क़तरे को इक नज़र में समन्दर बना दिया

देखो लताफ़तें निगहे लुत्फ़बार की
काँटे को मुसकुरा के गुलेतर बना दिया

कट कर भी सर तिलावते आयात ही करे
नैज़े तलक को शाह ने मिम्बर बना दिया

बेहतर हयात मौत से है, पर हुसैन ने
लो ज़िन्दगी को मौत से बेहतर बना दिया

हुब्बे अली ने कितनी चमक दी है क़ल्ब को
ज़र्रे को आफ़ताब का हमसर बना दिया।

फ़ितरत पे हमला करने बढ़े जब भी संग दिल
अश्क़ो का मैने जल्द ही लश्कर बना दिया

समझो अज़ाये शाह में रोने की अज़मतें
क़ुदरत ने अश्क बनते ही गौहर बना दिया

तब्लीग़ हो रही है दयारे यज़ीद में
वहदत ने क़ैदियों को पयम्बर बना दिया

लिखना है मरसिया तुझे प्यासो का ऐ 'नदा'
अच्छा किया कि आँखों को साग़र बना दिया

●●●